दैनिक ट्रिब्यून
स्थापना 15 अगस्त 1978

लद्दाख की अस्मिता

पर्यटकों की अराजकता से पर्यावरणीय क्षति

देश के पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील इलाकों में पर्यटकों के अराजक व्यवहार की घटनाएं आम हैं। वे अपनी मौज-मस्ती के लिये पारिस्थितिकीय रूप से अति संवेदनशील इलाकों में हस्तक्षेप अपना अधिकार मानकर चलते हैं। जिसके चलते पहाड़ों की क्षरणशील स्थितियां विकट बन जाती हैं। यही वजह है कि लद्दाख प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए, पर्यावरणीय दृष्टि से बेहद संवेदनशील इलाकों में गैर-कानूनी तरीके से वाहन चलाने वाले चार पर्यटकों पर पचास हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। निश्चित रूप से यह दंड देने का फैसला सिर्फ सलाह देने तक सीमित रहने के बजाय पर्यावरण और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिये बने कानूनों को सख्ती से लागू करने की दिशा में एक बड़े बदलाव के रूप में देखा जा सकता है। दरअसल, देश के पर्वतीय पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की तादाद लगातार बढ़ रही है, और उनके अराजक व्यवहार की खबरें भी आ रही हैं। लद्दाख में समय पर की गई कार्रवाई से स्पष्ट संदेश जाएगा कि मनोरंजन और रोमांच के लिये प्राकृतिक परिदृश्य को नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि लद्दाख में पैंगोंग झील, चांगथांग, हानले और नुब्रा घाटी के बेहद खूबसूरत नजारे यहां के नाजुक पारिस्थितिकीय तंत्र का ही हिस्सा हैं। जो संकटापन्न, दुर्लभ और लुप्तप्रायः जीवों के रहने की जगह भी है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सोशल मीडिया पर स्टंट करने की सनक पूरी करने के लिये ऐसी हरकतें की जा रही हैं, जो प्रकृति के कार्यक्षेत्र में सीधी-सीधी दखल है। निश्चित रूप से स्टंट करने या रोमांच के लिये झीलों, नदियों और प्राकृतिक संवेदनशीलता के चलते संरक्षित क्षेत्रों में गाड़ियां चलाना गैर-जिम्मेदार व्यवहार है। इससे भी अधिक यह उस इलाके की जैवविविधता और पारिस्थितिकीय संतुलन पर अतिक्रमण है। यहां हाल ही में एक दुर्लभ जीव का पीछा करती गाड़ी का वीडियो परेशान करने वाला था। जो वन्यजीवों के प्रति संवेदनहीनता को ही दर्शाता है।

निश्चित रूप से पारिस्थितिकीय दृष्टि से संवेदनशील दुर्गम इलाकों में पर्यटकों की अराजकता पर अंकुश लगाना बेहद जरूरी है। पर्यटक इन स्थलों पर जाकर शांति पाएं और स्थानीय लोगों व वन्य जीवों को भी शांति से जीने दें। लद्दाख प्रशासन द्वारा तकनीक के जरिये पर्यटकों के उच्छृंखल व्यवहार पर नजर रखी जा रही है। इसमें सोशल मीडिया पर पर्यटकों की गतिविधियों की निगरानी भी शामिल है। निस्संदेह, नियम तोड़ने वाले लोगों की समय रहते पहचान कर उन्हें दंडित करना जरूरी है ताकि आने वाले समय में अराजक व्यवहार करने वालों को सबक मिल सके। निश्चय ही लद्दाख प्रशासन ने वन्यजीव संरक्षण एक्ट 1972 को क्रियान्वित करके सराहनीय कार्य किया है। पारिस्थितिकीय दृष्टि से संवेदनशील इलाकों में घुसने वाली गाड़ियों को जब्त करना और भारी जुर्माना लगाना यह दिखाता है कि भविष्य में भी मनमानी करने वाले टूरिस्टों के साथ नरमी नहीं बरती जाएगी। निश्चित रूप से इस कार्रवाई से भविष्य में नियमों के उल्लंघन को रोकने और संरक्षित इलाकों के प्रति गरिमापूर्ण व्यवहार करने को बढ़ावा मिल सकेगा। सही मायने में यह कठोर कार्रवाई टिकाऊ पर्यटन की सोच के ही अनुरूप कही जा सकती है। हाल के दिनों में उठाये गए अन्य कदमों, मसलन सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक, कचरा फैलाने पर जुर्माना तथा लद्दाख टूरिज्म डेवलपमेंट सोसाइटी की स्थापना पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक दूरगामी सोच को ही दर्शाता है। दरअसल, इस रणनीति का उद्देश्य पर्यटन से होने वाली आर्थिक उन्नति और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन कायम करना है। दरअसल, हाल के दिनों में इस केंद्र शासित प्रदेश में पर्यटकों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है। लेकिन बढ़ते पर्यावरणीय दबाव के चलते स्थानीय लोगों की आजीविका पर खतरा मंडराने लगा है। सजा वाले उपायों के साथ-साथ जागरूकता अभियान चलाने और एडवेंचर गतिविधियों के लिये सख्त नियम भी लागू किए जाने चाहिए। निश्चित रूप से पर्यटकों को यह अहसास होना चाहिए कि लद्दाख के साफ-सुथरे पर्यावरण को संरक्षित रखना हम सबकी सामूहिक जवाबदेही है।

आज का विचार

किसी से प्रेम करने की सार्थकता इस बात में कि उन्हें उनके मूल स्वरूप में स्वीकार करें।
-लियो टॉलस्टाय

एकदा

आत्मविश्वास से सफलता

ओलिवर का जन्म 1728 में आयरलैंड में हुआ था। उनके पिता पादरी थे। बचपन में ओलिवर को चेचक हो गया। इससे उनके चेहरे पर दाग रह गए। स्कूल में उन्हें मंदबुद्धि समझा जाता था। यह बात नन्हे ओलिवर के दिमाग में बैठ गई। वे जब भी कुछ करते तो उसमें असफल हो जाते। एक दिन उन्होंने बांसुरी अपने होंठों से लगाई। कुछ ही देर बाद बांसुरी की मधुर धुन ने उन्हें मोहित कर दिया। वे समझ गए कि कुछ न कुछ तो वे जीवन में अवश्य कर सकते हैं। जब सब जगह प्रयास करने के बाद उन्होंने समय बिताने के लिए लेखन करना शुरू कर दिया। उन्हें मालूम था कि सब उन्हें असफल मानते हैं, इसलिए उन्हें कोई नहीं छापेगा। कुछ दिनों तक उन्होंने 'हैक राइटर' का काम किया। जब उनकी रचनाएं छपने लगीं तो फिर उन्होंने अपने नाम से लिखना शुरू किया। गरीबी में उन्होंने 'द विकार ऑफ वेकफील्ड' लिखी। इसे प्रकाशित कराने में उनके प्रिय मित्र एवं सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. सैमुअल जॉनसन का प्रमुख योगदान रहा। इस उपन्यास के प्रकाशन ने न केवल पूरी दुनिया को ओलिवर गोल्डस्मिथ जैसा लेखक दिया, अपितु यह भी साबित कर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति का हुनर और गुण अलग-अलग होते हैं।
-प्रस्तुति : रेनू सैनी

40 साल पहले

दैनिक ट्रिब्यून

चंडीगढ़ में रिजर्व पुलिस का नया सेक्टर

पीपीएस गिल द्वारा

अमृतसर, 29 जून। बेहतर पुलिस प्रबंधों के लिए सरकार ने चंडीगढ़ में मुख्यालय के साथ केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक नया 'सेक्टर' बनाया है। इस सेक्टर के प्रमुख आईजी हैं। आईजी, केपीएस गिल पदभार ग्रहण करने के बाद कल अमृतसर आये। अधिकारियों से विचार-विमर्श व नगर का दौरा किया। नये सेक्टर में यूटी चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और जम्मू कश्मीर शामिल हैं।

स्कूटर सवार गोली से उड़ाया, छिटपुट वारदातें

चंडीगढ़ (संवाददाता व एजेंसियां)। दो संदिग्ध आतंकियों ने आज होशियारपुर जिले में एक व्यक्ति को गोलियों से उड़ा दिया। पुलिस व सुरक्षा बलों ने पंजाब में पिछले 24 घंटों में कुछ और आतंकवादी पकड़े, अमृतसर व नकोदर में कर्फ्यू में ढील दी। कुछ छिटपुट वारदातों की सूचना है।

एआई विकास में मानवीय पहलू को मिले तरजीह

अश्विनी कुमार

मानवता के लिए एआई के करिश्माई फायदे सामने आ रहे हैं। यह तकनीक स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास में क्रांतिकारी बदलाव लाने में सक्षम है लेकिन इससे प्राइवेसी, रोजगार, असमानता और मानवीय मूल्यों से जुड़े खतरे भी हैं। विशेषज्ञों व नीति नियंताओं का दायित्व है कि एआई के उपयोग में मानवीय गरिमा तथा प्रभावी वैश्विक नियमन को प्राथमिकता मिले।

मानवता की सेवा में विज्ञान और नवाचार की असीम संभावनाओं का उपयोग करते हुए, मानव इतिहास के सबसे अहम दौर में, एआई क्रांति एक परिवर्तनकारी क्षण के रूप में दिखाई देती है। प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाने वाली इसकी क्षमता उपलब्धियों पर गर्व करने को जायज ठहराती है, वह उपलब्धि जिससे देवता तक ईर्ष्या करें, जो मानवता की संयुक्त आविष्कारक क्षमता का सम्मान है। दोहराव वाले उबाऊ कार्यों का स्वचालन कर फुर्सत के लिए समय उपलब्ध कराना, जरूरी सेवाओं तक पहुंच बढ़ाना, चिकित्सा में नई खोजें, दीर्घायु बनाना और बेहतर स्वास्थ्य सेवा यकीनी बनाना, जिसमें कैंसर जांच और घातक बीमारियों का पूर्वानुमान भी शामिल हैं, रोगियों की रोबोटिक देखभाल, वंचित वर्गों को मदद का अधिक प्रभावी और लक्षित वितरण, सभी के लिए शिक्षा और ज्ञान तथा आपदा प्रबंधन व मौसम पूर्वानुमान सहित अनेक तरीकों से पर्यावरण सतता बनाने में व्यापक योगदान, ये सभी अधिक समावेशी विकास उद्देश्य की दिशा में एआई के कुछ सबसे अहम योगदान हैं।

फिर भी, मानव समाज के भविष्य और 'बुद्धिमत्ता की नियति' से जुड़े प्रश्नों पर दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, नेताओं और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच बहस जारी है। इनमें से कुछ उस एआई के भावी विकास व क्रियान्वयन पर विराम लगाने की अपील करते हैं, जो हमारी मानवता की अवधारणा को ही अवरुद्ध कर सकती हो। वहीं एआई समर्थकों के दावे हैं कि इसकी मदद से वस्तुओं एवं सेवाओं की 'अद्भुत प्रचुरता' बनेगी और चेतावनी देते हैं कि नियमन से वैज्ञानिक प्रगति धीमा करने से उन अहम प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा जो मानवीय संवेदनाओं और सहसम्बन्धियों तक चली सांस्कृतिक विकास-यात्रा के जरिये हमारे अस्तित्व की गहराइयों में समाहित भावनाओं के आधार पर नैतिक सुरक्षा-सीमाओं की आवश्यकता रेखांकित करते हैं। हम कौन हैं, और क्या हम मानवता के ऐसे नए नैरेटिव के लिए तैयार हैं जिसमें कार्यात्मक दक्षता और वादे मुताबिक भौतिक समृद्धि, मानवीय आकांक्षाओं व भावनाओं की गरिमा पर हावी हो जाए, यह एक अपरिहार्य प्रश्न है, जिसने तकनीकी चमत्कारों के आकर्षण में बहने को रोके रखा है। यह इसलिए अहम है कि एआई तकनीक मानवीय भावनाओं और अंतर्ज्ञान को समझने सहित संज्ञानात्मक कौशलों की नकल कर सकती है, व कई बार बेहतर प्रदर्शन भी कर सकती है। क्या हम अनंत तकनीकी उथल-पुथल और रोजगार बाजार में दीर्घकालिक अस्थिरता से पैदा 'तनाव की वैश्विक महामारी' के लिए तैयार हैं, साथ ही 'बेकार' हुए करोड़ों लोगों की अनुमानित भीड़ के लिए, जिसे तकनीकी परिवर्तन के प्रभावों से तालमेल बैठाने में असहनीय तनाव झेलना पड़ेगा? क्या हमारे पास ऐसे सामाजिक-आर्थिक मॉडल हैं जो व्यक्ति का आत्मसम्मान बचा पाएं और सबके लिए अपनत्व व भावनात्मक कल्याण से पूर्ण जीवन यकीनी बनाएं? ये दार्शनिक प्रश्न इंसानी नजरिये से पैदा होते हैं, जिसकी नींव मानवीय मूल्यों पर टिकी है। इस पर गंभीर चिंतन जरूरी है कि 'मन के उस गुप्त क्षेत्र को कैसे सुरक्षित रखा जाए, जहां से भावनाएं जन्मती हैं, प्रेरणा पलती है, व इच्छाएं स्पंदित होती हैं- मानवीय आत्मा का वह आत्मपरक पक्ष जो हम स्व को अनिवार्यतः वह बनाता है, जो हम हैं'।

डेटा गोपनीयता की कमजोरियां, दुष्प्रचार का प्रसार, चुनावी हेराफेरी, सुपर इंटेलिजेंट हथियार प्रणालियों के नियंत्रण से बाहर हो जाने की संभावना, एआई-सक्षम फिशिंग मुहिम तथा निगरानी एवं सेंसरशिप- ये कुछ भयावह संकेत हैं जो किसी प्रभावी वैश्विक नियामक के अभाव में सामाजिक उथल-पुथल की वजह बन सकते हैं। राष्ट्र और राज्यों की डिजिटल संप्रभुता बनाए रखना चुनौती है, क्योंकि डेटा पर नियंत्रण राष्ट्रीय सुरक्षा और देशों की रणनीतिक स्वायत्तता से जुड़ा है।

इसलिए, एआई की यह दुनिया, जो मानवता का भविष्य बदलने में सक्षम है, उसे ऐसी नैतिक दृष्टि चाहिये जो तकनीकी प्रगति का तालमेल अच्छे और खुशहाल समाज की जरूरतों से बिठा सके। अति आत्मविश्वास बोध को टेरी ईगल्टन ने ऐसे व्यक्त किया: 'अति आत्म-विश्वास अंततः विनाशकारी होता है, जिसने प्राचीन यूनानियों को भय के चलते आकाश की ओर देखने पर विवश कर दिया था'। स्पेनी दार्शनिक जोसे ओर्तेगा वाई गासेट याद दिलाते हैं 'हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जब मनुष्य स्वयं को बेहद सक्षम मानता है, परंतु उसे नहीं पता कि क्या सृजित करे। वह सबका स्वामी है, किंतु खुद का नहीं। पहले से अधिक साधन, ज्ञान और तकनीक होने के बावजूद, आज की दुनिया भी उसी दिशा में जा रही जिस दिशा में अब तक की सबसे बुरी दुनिया गई थी'।

'एआई के युग में मानव की व्यक्तिगत रक्षा' शीर्षक से पोप लियो चौदहवें का धर्मादेश-पत्र एआई से जुड़े मानवतावादी द्वंद्वों पर नैतिक बहस को व्यक्त करता है। यह स्वीकार करते हुए कि प्रौद्योगिकी मानवता की विरोधी नहीं, पोप ने बल दिया है कि एआई के इस युग में, जब मानव गरिमा अमानवीकरण के नए रूपों से संकटग्रस्त है, तब हम 'मशीनी से मानवीय' बने रहें। व्यक्ति की गरिमा के आधार पर नैतिक विवेक के मानदंड स्थापित करने की जरूरत बताते हुए, सम्माननीय पोप ने 'केवल अपनी चलवाने' वाला भ्रम बनाने के विरुद्ध चेताया और ऐसी प्रगति के प्रति सावधान किया जो असमानता बढ़ाती हो तथा लोगों के दुख न हर सके। उन्होंने 'लाभ की पूजा, जो कमजोरों की बलि लेती हो; ऐसी एकरूपता, जो भिन्नता को निष्प्रभावी करे; और यह दिखावा कि एक ही भाषा, डिजिटल भी, में सबकुछ अनुवादित किया जा सके, इसमें व्यक्ति के रहस्य को आंकड़ों में बदलना शामिल है', उसे नामंजूर करने का आह्वान किया है। पूज्य पोप के ये बयान ऐसी दुनिया के लिए नैतिक निर्देश हैं, जिसे अपनी रचनाओं से परे 'इंसानियत की शान और भव्यता' और एआई की 'भावनात्मक, रिश्तों या आध्यात्मिक क्षमताओं' से जुड़ी सीमाएं याद दिलाना जरूरी है। पोप द्वारा व्यक्त नैतिक नियम बताता है कि इंसानियत, इंसान की 'नाजुकता व नकासत' सीमाओं में ही फलती-फूलती है।

इस प्रकार, इंसानी गरिमा पर आधारित केंद्रीय मानवीय मूल्यों के नजरिए से देखें तो, दुनिया भर के नेताओं से उम्मीद की जाती है कि वे एआई के इस्तेमाल और नियमन में 'इंसान को केंद्र में रखने वाला' ढंग अपनाएंगे ताकि मानवता का भला हो और उनके फैसलों के केंद्र में व्यक्ति हो। प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में पेरिस में हुए विवाटेक सम्मेलन (17-20 जून, 2026) और उससे पूर्व फरवरी 2026 में नई दिल्ली में ग्लोबल इंडिया एआई समिट में ऐसे ही ढंग पर जोर दिया था। इसके लिए एआई का उपयोग नियंत्रित करने को स्वैच्छिक और अबाध्यकारी शर्तों के बजाय मजबूत व लागू करने योग्य नियमन व्यवस्था की जरूरत होगी, जो अत्याधुनिक एआई तक हरेक की पहुंच आसान बनाता हो और जिस दौर में 'सब कुछ एक जैसा करके देखा व किसी चीज़ का सम्मान न रखा' जाता हो-वहां एक साझा और भरोसेमंद एआई पारिस्थितिकी सुनिश्चित की जाए। राष्ट्र इस ऐतिहासिक चुनौती से कैसे निपटेंगे, यह बात नेतृत्व की गुणवत्ता व समानता एवं मानवीय गरिमा पर आधारित समावेशी लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को परिभाषित करेगी, जो हमारी सभ्यता की परम चाहत है।

लेखक पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री हैं।

सरलता की जरूरत

बुजुर्गों की सुविधा-सुरक्षा अनुकूल हों डिजिटल सेवाएं

विवेक शर्मा

तकनीक ने मानव जीवन की रफ्तार को अभूतपूर्व गति दी है। सुबह की चाय के डिजिटल भुगतान से लेकर हवाई टिकट और बैंकिंग तक, सब कुछ अब एक छोटी-सी स्क्रीन पर सिमट गया है। युवाओं के लिए यह सुविधा और अवसर का नया संसार है, लेकिन हमारे बुजुर्गों के लिए यही दुनिया कई बार उलझन, असुरक्षा और निर्भरता का कारण बन जाती है। अपनों से जुड़े रहने की खुशी और हर काम के डिजिटल होने की मजबूरी के बीच पुरानी पीढ़ी जिस संघर्ष से गुजर रही है, वह आज की एक बड़ी विडंबना बन गई है।

स्मार्टफोन अब केवल युवाओं का उपकरण नहीं रहा। दादा-दादी वीडियो कॉल पर दूर बैठे अपने पोते-पोतियों को देखकर भावुक हो उठते हैं। व्हाट्सएप पर परिवार से जुड़े रहना, पुराने मित्रों को खोजना और यूट्यूब पर भजन सुनना उनके अकेलेपन को काफी हद तक कम करता है। लेकिन यही तकनीक कई बार उनके लिए परेशानी का कारण भी बन जाती है। स्क्रीन पर दर्जनों एप, लगातार आने वाले संदेश, अचानक बदली हुई सेटिंग या किसी जरूरी फाइल के मिट जाने का डर उन्हें हमेशा असहज बनाए रखता है। छोटी-सी तकनीकी चूक भी उनका आत्मविश्वास डगमगा देती है। कई बुजुर्ग इस डर से स्मार्टफोन का सीमित उपयोग करते हैं और हर नए डिजिटल काम के लिए परिवार के किसी सदस्य का इंतजार करते हैं। उनकी आत्मनिर्भरता भी प्रभावित होती है।

सबसे गंभीर चिंता साइबर ठगी का बढ़ता खतरा है। डिजिटल दुनिया की सीमित समझ का फायदा उठाकर अपराधी बुजुर्गों को सबसे आसान निशाना बना रहे हैं। फर्जी बैंक अधिकारी, पुलिसकर्मी या सरकारी कर्मचारी बनकर फोन करना अब आम बात हो गई है। 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे नए साइबर अपराधों में ठग वीडियो कॉल के जरिए कानूनी कार्रवाई का डर दिखाकर वरिष्ठ नागरिकों से लाखों-करोड़ों रुपये ठग लेते हैं। केवाईसी अपडेट, पेंशन बंद होने या बैंक खाते के सत्यापन के नाम पर ओटीपी और बैंक विवरण हासिल कर जीवनभर की जमा-पूंजी साफ कर दी जाती है। आर्थिक नुकसान उन्हें गहरा मानसिक आघात भी पहुंचाता है, जिससे कई बुजुर्ग अवसाद और असुरक्षा के शिकार हो जाते हैं। कई मामलों में ठगी के बाद वे खुद को दोषी मानने लगते हैं, परिवार के सामने अपनी बात रखने से हिचकिचाते हैं। स्थिति आर्थिक ही नहीं, भावनात्मक संकट भी पैदा करती है।

मगर वे इस डिजिटल व्यवस्था से दूर नहीं रह सकते। पेंशन, बैंकिंग, बिजली-पानी के बिल, सरकारी योजनाएं और स्वास्थ्य सेवाएं लगातार ऑनलाइन होती जा रही हैं। पहले पेंशनभोगी बैंक जाकर जीवन प्रमाण पत्र जमा करते थे। अब डिजिटल जीवन प्रमाण की प्रक्रिया में बायोमेट्रिक सत्यापन जरूरी है। बढ़ती उम्र के साथ उंगलियों के निशान धुंधले पड़ जाने से कई बार सत्यापन सफल नहीं हो पाता। ऐसे में उन्हें बार-बार सेवा केंद्रों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। बैंकिंग भी अब पासबुक से आगे बढ़कर पासवर्ड, ओटीपी और मोबाइल एप पर निर्भर हो गई है। एक पासवर्ड भूल जाने का मतलब कई बार अपने ही पैसे के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाना है। रेलवे टिकट, अस्पताल में पंजीकरण, गैस बुकिंग, बीमा, पेंशन और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने जैसी अनेक सेवाओं में भी डिजिटल माध्यम प्रमुख हो चुका है। ऐसे में तकनीक से दूरी का अब विकल्प नहीं रह गया है।

डिजिटल बदलाव का एक सामाजिक पहलू भी है। संयुक्त परिवारों के टूटने और युवाओं के रोजगार हेतु बाहर जाने से बुजुर्ग अकेले रह रहे हैं। ऐसे में मोबाइल और इंटरनेट अनिवार्य जरूरत बन गए हैं। जब उनके सामने तकनीकी समस्या आती है, तब अकेलापन व असहायता का एहसास गहरा हो जाता है। जरूरी है कि डिजिटल साक्षरता को केवल तकनीकी प्रशिक्षण नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा के रूप में भी देखें।

निस्संदेह, तकनीक दौर में चुनौती यह है कि विकास समावेशी हो। डिजिटल सेवाओं का डिजाइन वरिष्ठ नागरिकों की जरूरतों के अनुरूप बनाया जाए। बैंकिंग व सरकारी एप अधिक सरल हों, बड़े वित्तीय लेनदेन में अतिरिक्त मानवीय सत्यापन की व्यवस्था हो तथा साइबर सुरक्षा को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान चलाए जाएं। बैंक, डाकघर, पंचायतें, स्वयंसेवी संस्थाएं और स्थानीय प्रशासन समय-समय पर वरिष्ठ नागरिकों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण शिविर लगाएं। इनसे आत्मविश्वास बढ़ने संग, वे तकनीक का सुरक्षित उपयोग कर सकेंगे। डिजिटल साक्षरता गांव व मोहल्ले तक पहुंचे।

जिन माता-पिता और दादा-दादी ने कभी हमारी उंगली पकड़कर चलना सिखाया, आज उन्हें डिजिटल दुनिया में हमारा सहारा चाहिए। उनकी हर शंका पर झल्लाने के बजाय धैर्य से समझाना होगा कि कोई बैंक या पुलिस अधिकारी फोन पर ओटीपी नहीं मांगता और न ही वीडियो कॉल पर गिरफ्तारी होती है। तकनीक की सफलता तभी है, जब वह हर पीढ़ी को साथ लेकर चले। आधुनिकता का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब हमारे बुजुर्ग भी डिजिटल दुनिया में सम्मान, आत्मविश्वास और सुरक्षा के साथ जी सकें।

उलटबांसी

कानून हाथी जैसे मगर लागू होते चींटी जैसे

आलोक पुराणिक

फिर ब्रिटिश पीएम ने इस्तीफा दिया पिछले 12 सालों का हिसाब देखें, तो अब वहां सातवें पीएम आयेंगे। 12 सालों में अमेरिका तीन राष्ट्रपति देख चुका है। भारत में 12 सालों से एक ही पीएम है। अमेरिका और ब्रिटेन के नेता अब इंडिया का पीएम बनने की अर्जी लगा सकते हैं

दिल्ली में आग, लखनऊ में आग, सिस्टम का दाग। दसियों की मौत। उफ्फ, एक कहावत है जान बची और लाखों पाये। दिल्ली की आग में मैं हो सकता था, नहीं था, सो बच गया। सो लाखों उस आग से पाये। लखनऊ की आग में भी मैं हो सकता था, बच गया, लाखों यहां भी पाये। कहीं के लटके हुए पुल, कहीं की अटकी हुई लिफ्ट से बचकर हम सबको अरबपति फील करना चाहिए। गालिब की रोती हुई रूह ने मंजूर अहमद का शेर सुनाया-

देखोगे तो हर मोड़ पर मिल जाएंगी लाशें,
ढूंढोगे तो इस शहर में कातिल न मिलेगा।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने मजाक में कहा कि उनकी जिंदगी में दो महत्वपूर्ण लोग हैं, जिनसे लगातार बात होती है। एक उनकी इंडियन पत्नी ऊषा, दूसरे पाकिस्तानी जनरल असिम मुनीर। सीरियस बात यह है कि पाक जनरल उस लेवल के हैं कि उनकी ड्रेस तक के पैसे भीख से आते हैं। पर ऊषा मैडम ऐसी काबिल आत्मनिर्भर हैं कि कुछ डॉलर की भीख जनरल को दे सकती हैं।

फिर ब्रिटिश पीएम ने इस्तीफा दिया पिछले 12 सालों का हिसाब देखें, तो अब वहां सातवें पीएम आयेंगे। 12 सालों में अमेरिका तीन राष्ट्रपति देख चुका है। भारत में 12 सालों से एक ही पीएम है। अमेरिका और ब्रिटेन के नेता अब इंडिया का पीएम बनने की अर्जी लगा सकते हैं अपने बायोडाटा की फाइलों के साथ। जॉब सिक्योरिटी इंडिया में ही है जी।

ट्रंप से सूरमा भोपाली ने पूछा- क्या आपको ईरान का यूरेनियम मिल गया।

ट्रंप ने बताया कि नहीं यूरेनियम नहीं मिला, पर हम जीत गये।

सूरमा भोपाली ने पूछा-
क्या आपको होरमुज पर हक मिला।

ट्रंप ने कहा- नहीं मिला, पर हम जीत गये।

सूरमा भोपाली ने कहा - आप भी मेरे जैसे हैं गप्पबाज सूरमा होरमुजी। मेरे लिए गप मौज थी, आपके लिए गप एक पॉलिसी है।

एक यमदूत ने कहा कि ऊपर से टारगेट बढ़ाने का ऑर्डर है।

दूसरे वाले ने बताया कि सबसे ज्यादा ईजी डेथ टारगेट कोचिंग इंस्टीट्यूट, होटल, शॉपिंग माल हैं। यहां से शिकार आसानी से मिलते हैं।

इंडिया में रूल हाथी जैसे हैं पर इंप्लिमेंटेशन चींटी जैसा है। इसे चिड़ियाघर रूल कह सकते हैं।

शिव सेना एक से दो हो गयी, शरद पवार की पार्टी एक से दो हो गयी, टी एम सी भी एक से दो हो गयी।

इससे पहले इंडियन पॉलिटिक्स में इतनी दो नंबरी कब देखी गई थी।

नेता दो नंबरी होते थे, पार्टियों में ये नंबर हाल में आया जी।

आपकी राय

मां-बाप भी बदलें

पुणे के वेदन अग्रवाल और इंदौर के राजा रघुवंशी हत्या मामलों ने बदलते सामाजिक परिवेश में माता-पिता और बेटियों के बीच बेहतर व स्पष्ट संवाद, तथा मित्रवत् व्यवहार की आवश्यकता को रेखांकित किया। ये घटनाएं बताती हैं कि केवल सामाजिक प्रतिष्ठा के दबाव में बेटी पर विवाह थोपना हल नहीं। उनकी भावनाओं, इच्छा और पसंद को समझना, सम्मान देना तथा मार्गदर्शन करना ही स्वस्थ पारिवारिक संबंधों और बेहतर निर्णयों का आधार बन सकता है।
अभिलाषा गुप्ता, मोहाली

उपभोक्ता परेशान

कुछ शहरों में स्मार्ट मीटर लगाने के बाद बिजली बिल असामान्य रूप से अधिक आने की शिकायतें मिल रही हैं। इससे उपभोक्ता परेशान होकर बिजली विभाग के चक्कर लगा रहे हैं। वे सरकार से मांग कर रहे कि स्मार्ट मीटर तकनीक की जांच कर सही रीडिंग यकीनी की जाए व उपभोक्ताओं को राहत दी जाए।
शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर (म.प्र.)

नागरिकता का सवाल

भारत में नागरिकता के प्रमाण को लेकर बहस जारी है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, पासपोर्ट केवल यात्रा दस्तावेज है, नागरिकता प्रमाण नहीं। आधार कार्ड निवास का प्रमाण है, जबकि वोटर आईडी केवल मतदान का अधिकार दर्शाती है। भारतीय नागरिकता, नागरिकता अधिनियम, 1955 के प्रावधानों के अनुसार जन्म, वंश, पंजीकरण या क्षेत्र के विलय से प्राप्त होती है। असम के एनआरसी के बाद नागरिकता की स्पष्ट पहचान संबंधी व्यवस्था की जरूरत पर चर्चा तेज हुई।
जशनदीप सिंह, कुरुक्षेत्र वि.वि., कुरुक्षेत्र

बढ़ती अस्थिरता

अमेरिका-ईरान के बीच हालिया तनाव के बाद शांति की उम्मीद जगी थी, लेकिन नई सैन्य कार्रवाइयों से खाड़ी क्षेत्र में फिर अस्थिरता बढ़ गई है। इसका असर कच्चे तेल की आपूर्ति और वैश्विक महंगाई पर पड़ सकता है। ऐसे समय भारत को अपने राष्ट्रीय हित व एशियाई देशों की ऊर्जा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कूटनीतिक प्रयासों से क्षेत्र में स्थायी शांति और संवाद को बढ़ावा देने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
एमएम राजावत राज, शाजापुर

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशनार्थ लेख इस ईमेल पर भेजें :-
dtmagzine@tribunemail.com